संगोष्ठी श्रृंखला

महाकौशल धरा की धरोहर से आत्मनिर्भर भारत

श्रृंखला उद्घाटन उद्बोधन - 9.01.2021, 11:30 - 12:30

मुख्य अतिथि

माननीय (डॉ.) ढालसिंह बिसेन, संसद सदस्य

दि. 11.01.2021
व्याख्यान
डॉ.बी.एन.त्रिपाठी

दि. 12.01.2021
व्याख्यान
डॉ. सुरेश मिश्र

दि. 12.01.2021
व्याख्यान
डॉ. एस.सी. शर्मा

आयोजक :

डॉ. सोमासी श्रीनिवास
क्षेत्रीय निदेशक,
इग्नू क्षेत्रीय केंद्र जबलपुर

डॉ. हरीश कुमार केवट
सहा. क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू

डॉ.विवेक श्रीवास्तव
सहा. क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू

डॉ. अनीता पहारिया
सहा. क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
क्षेत्रीय केंद्र जबलपुर, म.प्र.
Website – rcjabalpur.ignou.ac.in

संगोष्ठी हेतु वेबलिंक - http: //meet.google.com/bax-wgtv-ydv

संगोष्ठी का परिचय

15 अगस्त 1947 को प्राप्त बाहरी शासन से स्वतंत्रता के सात दशक पश्चात आज किसी न किसी कारण हम अपनी धरोहर से परे होते गए हैं. आज जब हम देखते हैं कि आज का युवा अपनी जड़ों से दूर होता जा रहा है. फलस्वरूप वह अपनी प्रांतीय सम्पदा को सहेजने और समृद्ध करने में दिशाहीन प्रतीत हो रहा है. इसके साथ ही वैश्वीकरण के प्रभाव में भारतीय अर्थव्यवस्था भी बाह्य स्त्रोतों पर निर्भर होती चली गयी परन्तु गौरवमय भारतीयता कहीं दूर पीछे रह गयी है जिसे ढूंढने के लिये भी बाहरी ज्ञान का सहारा लिया जा रहा है.

पिछले दिनों में जब हम सब कठिन दौर से गुजर रहे थे, हमारा समूचा समाज और मनुष्यता दाँव पर लगी हुई थी, एक त्रासद दौर में जब एक महामारी ने हमारी तमाम स्थापित व्यवस्थाओं को हिला कर रख दिया, ऐसे कठिन समय में हमारे दूर-दृष्टा माननीय प्रधानमंत्री जी ने सतत विकास के लिए, समाज के हर वर्ग को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण सूत्र हमें दिया - "वोकल फॉर लोकल". उनका स्थानीयता के लिए इस आन्दोलन का आग्रह सुस्पष्ट और दूरदृष्टिपूर्ण है. स्थानीय संसाधनों का समुचित और अधिकतम उपयोग और उनके निरंतर नवीकरण से, स्थानीय के सहयोग से, सबके साथ और सबके विकास की एक नई इबारत लिखना. आत्मनिर्भर भारत की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण सूत्र है जिसका महत्व असंदिग्ध है.

स्थानीय संसाधनों पर भरोसा किया जाना बहुत जरूरी है क्योंकि यह सर्वसुलभ हैं, अधिकतम स्थानीय लोगों को जोड़कर रखने और रोजगार देने में सक्षम हैं. हमारी पारंपरिक ज्ञान प्रणाली, कृषि, विपणन, कला, संस्कृति न सिर्फ समृद्ध रही है बल्कि सदियों से पीढ़ियों को प्रगतिमाय बनाती आयी है. बीच के समय के एक हिस्से में हमने खुद पर ही भरोसा खो दिया और हम हर छोटी-बड़ी बात के लिए अपने बीच से बाहर किसी और पर निर्भर करने लगे, जबकि सतत विकास के लिए हमें जीवन सूत्र अपने ही बीच से स्थानीय स्तर पर ही मिल सकते थे. आज स्थानीयता के लिए उसी विश्वास को फिर से जागृत करने और उसे अपना सामाजिक जीवन आधार बना कर आगे बढ़ने की ज़रूरत है. अपनी ज्ञान परंपरा को फिर से सहेजने की और धरा की धरोहर की पहचान की ज़रूरत है.

युवा शक्ति से परिपूर्ण वर्तमान प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत, वोकल फॉर लोकल के आह्वाहन ने हम सब को एक दिशा प्रदान की है, जिससे पुनः भारत को विश्वगुरु बनाने में हम सब योगदान दे सकें. इन्हीं बातों पर भरोसे के साथ, अपनी स्थानीयता को, स्थानीय विद्वानों, अर्थशास्त्रियों, कृषि विज्ञानियों, उद्यमियों, व्यवसायियों के अनुभवों से अपने क्षेत्र को केंद्र में रख कर 'महाकोशल क्षेत्र' की विशेषताओं, विशिष्टताओं को फिर से पहचानने और विश्व-पटल पर अपनी अस्मिता की छाप छोड़ते हुए विकास की राह पर आगे, और आगे बढ़ते जाने की अवधारणा को सुदृढ़ करने हेतु इग्नू क्षेत्रीय केंद्र जबलपुर द्वारा आयोजित वेबिनार श्रंखला महाकोशल प्रान्त की धरोहर को जागरूक कर विशेषकर युवा वर्ग को जोड़ने में एक प्रयास है.

इस श्रंखला का मूल उद्देश्य क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं पर विशेषज्ञों के व्याख्यान से महाकोशल क्षेत्र के युवा आत्मनिर्भर भारत में अपनी भूमिका के पहचान करें और अपना सक्रिय योगदान दे सकें.

जय हिन्द!!